★★ आजकल★★

मैंने राशि लिख ली थी, जब वो मेरे ऑफिस में आया । वो बड़ा हताश और खिन्न दिख रहा था । लेकिन मुझे बड़ी आशा भरी दृष्टी से देख रहा था । मैंने एक गहरी साँस ली और आराम से अपनी रिवॉल्विंग चेयर में पसर गया और उसको मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया । मैं उसके अंदाज़ से समझ गया था कि - वो मेरा बहुत टाइम लेने वाला था । वो कुंडली साथ लेकर आया था और मेरी ओर बढ़ाता हुआ बोला - 'सर, मेरी वाइफ की कुंडली है - सर, बहुत तंग हूँ, बहुत परेशान हूँ - पागल हो जाऊंगा, सर ।'

मेरी तवज्जो पाकर वो जैसे फूट पड़ा ।

मेरी कुछ समझ में नहीं आया । मैंने उसकी वाइफ की कुंडली देखी - उसमे चौथे भाव में शनि-मंगल युति देख कर मेरा माथा ठनका - अब मैं उसकी बात समझने लगा था । मामला वर्चस्व जमाने का था, एक पत्नी अपने पति की लुटिया डुबोने में लगी थी ।

शनि + मंगल, युतियोग ।

दो प्रबल पाप ग्रहों का कुंडली में एक साथ बैठ जाना बहुत क्रूर योग बनाता है । इससे जातक के अंदर क्रूरता का भाव आता ही है । मैं इसे 'कुटिल बुद्धि योग' कहता हूँ । क्योंकि ऐसे जातक अपनी कुटिल बुद्धी से दूसरों पर वर्चस्व कायम करने को प्राथमिकता देते हैं ।

इन जातकों का ये स्वभाव घर से ही आरम्भ हो जाता है । जीवनसाथी के लिये ये बहुत क्रूर सिद्ध होते हैं जिनसे इनका वैवाहिक जीवन कटु रहता है । ये योग किसी स्त्री की कुंडली में हो तब भी वैवाहिक जीवन कटुता से बच नहीं पाता है । प्रबल वैचारिक मतभेद प्रकट हो ही जाते है । कुंडली के चौथे भाव में ये योग बुद्धी को तो कुटील कर ही देता, ऐसा व्यक्ति भावनात्मक रूप से भी कुटील हो जाता है ।

अभी मैं ये समझने का प्रयास ही कर रहा था कि - वो फिर बोलने लगा, - सर, मुझे दोषी सिद्ध करने का वो कोई मौका नहीं छोड़ती । छोटी-छोटी बातों के लिये वो मुझे दोषी ठहराती है । जैसे - मैं अगर ऑफिस में बिजी हूँ और उसके मेसेज का जवाब नहीं दिया तो वो बोलती है कि - बिजी हो तो - मुझे बता दिया करो । सर, बिजी आदमी - कैसे बताये कि - वो बिजी है । अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो - उसके हिसाब से, मैं उसको अवॉयड करता हूँ ।

वो बोलती है - मैं बहुत शक्की हूँ, लेकिन मुझे तो शक्क् करने का टाइम ही नहीं मिलता । मिन्नतों के अंदाज़ में तो मैं उससे बात करता हूँ । इस आशंका से कि - कहीं वो नाराज़ ना हो जाये । बोलती है - मैं बहुत गुस्सा करता हूँ, लेकिन उसको खुश करने के चक्कर में मुझे तो अपना ही कुछ याद नहीं रहता - तो गुस्सा कहाँ से याद रहेगा ।

बोलती है - मैं हमेशा बिजी रहता हूँ, उसका ख्याल ही नहीं करता, लेकिन उसके ख्याल से ही मेरा तो पीछा नहीं छूटता - एक दहशत की तरह वो मुझ पर सवार रहती है । मैं तो अपना काम भी नहीं कर पा रहा हूँ । वो रुआंसे स्वर में बोला ।

लेकिन अब मुझे क्रोध आने लगा है, मैं चिड़चिड़ा होने लगा हूँ - सर । जो बातें पहले मुझमे नहीं थी - वो अब उसने मुझमे पैदा कर दी हैं । अब मैं बात-बात पर गुस्सा करता हूँ और वो मुझे इस बात के लिये खूब दोषी ठहराती है और बोलती है - देखा, मैं सही थी । तुम शक्की, क्रोधी और चिड़चिड़े इंसान हो ।

इससे मुझमे हीन भावना आने लगी है - सर । मैं पहले ऎसा नहीं था । मैंने उसको खुश करने के लिये - पता नहीं, कैसे-कैसे जतन किये । लेकिन वो खुश नहीं होती बल्कि वो अब किसी विजेता की तरह मुझ पर हुकुम चलाती है और चेतावनी भरे लहजे में बात करती है - मानो, उसकी मर्ज़ी से नहीं चला तो मुझे दोषी सिद्ध कर देगी ।

फिर वो जोश में आकर बोला - दोषी तो क्या, वो मुझे पागल ही सिद्ध करके छोड़ेगी । लोग अक्सर मेरे पास आते थे और मेरी बात सुनने के बजाय अपनी बात मुझे सुनना जरूरी समझते थे । ऐसे लोगों को रोकना मुश्किल होता था । वो अपनी बात सुनाये बैगेर चुप ही नहीं होते थे । वो आगे बोला - 'सर, वो मेरे दिलोदिमाग पर सवार है । मैं उसको खुश भी नहीं कर पाता हूँ और नाही उसको शांत कर पाता हूँ ।

वो हर तरीके से मुझ पर इल्जाम लगा लेती है और मैं संभल-संभल कर कदम रखने पर भी गिर पड़ता हूँ ।

'शादी कैसे हुई, तुम दोनों की ? मैंने उसको बीच में टोक कर पूछा ।

- मेरा मतलब है - लव-मैरिज थी याँ अरेंज- मैरिज थी ? मैंने अपने प्रश्न को सुधारकर पूछा ?

वो बोला - 'सर, एक ही ऑफिस में काम करते थे । मैं नया-नया ज्वाइन हुआ था, वो वहां पहले से थी । थोड़े दिनों में उससे बात हुई और फिर अक्सर होने लगी । वो अक्सर मेरे टेबल के करीब आ जाती और केन्टीन चलने को बोलती - मैं कुछ संकोच से और कुछ मैनर के चलते उसके साथ चला जाता था । फिर ये रोज का सिलसिला हो गया । फिर सेल नं दिये गये । फिर वो शिकायत करती थी कि - मैं उसको मेसेज नहीं करता था । मैं मूर्खों की तरह उसको मेसेज करने लगा । फिर उसने शिकायत की कि - मैं बिलकुल भी रोमांटिक नहीं था । मैंने गधों की तरह रोमांटिक होने की कोशिश की । फिर वो बोली कि - मैंने कभी उसको प्रोपोज़ नहीं किया । और मैंने उल्लुओं की तरह उसको प्रोपोज़ कर दिया । फिर शादी कब हुई और मैं आरोपी कब हुआ - पता ही नहीं चला । अब मैं उसका गुनेहगार हूँ ।'

फिर वो हताशा से रोने लगा ।

उसकी सारी बातों का मतलब ये था कि - एक लड़की ने उसे फंसाया था और ज़ाहिर ऐसे किया था मानो - वो लड़के के प्रेमजाल में फंसी थी और प्रोपोज़ करके उसने उससे शादी की थी, और अब वो बे-वफ़ा सिद्ध हो रहा था । लड़की बहुत होशियार दिख रही थी और दुनियादारी खूब जानती दिखती थी ।

उसने बहुत सोच-समझकर लड़के के नट-बोल्ट कसे थे । उसके सारे सिस्टम पर लड़की का कंट्रोल था । दरअसल - लड़की के मोहजाल में फंसकर उसने शादी क्या कर ली - जैसे किसी शेरनी की पूँछ पकड़ ली थी, अब वो उसको छोड़ भी नहीं सकता था और पकड़े भी नहीं रह सकता । अजीब जीने-मरने की कश्मकश थी ।

लड़की की कुंडली थी भी हाहाकारी, पाप ग्रहों ने खूब डेरा डाल रखा था - उसके तन-मन पर । वो अंतर्मन से रूखी और स्वभाव से बिलकुल सूखी थी । जिसपर प्रेम, स्नेह और अपनेपन की शबनम बिल्कुल नहीं गिरी थी ।

लेकिन - मैं क्या कर सकता था ?

लड़की का बुनियादी स्वभाव ही ऐसा था कि - उसमे बदलाव लाना असंभव था । उसपर अगर वो लड़की खुद आती तो कुछ सोचा भी जा सकता था । यहाँ तो - शेर से पंजा लड़ाने का मुहूर्त, बिल्ली पूछने आई थी, जोकि असंभव था ।

मैंने उसे समझाया कि - लड़की के ग्रह बहुत प्रबल थे और अभी उसपर पापग्रह की दशा चल रही थी । अभी लड़की का कुछ नहीं किया जा सकता था, उसको कुछ दिन शांत रहना होगा ताकि समय आने पर शुभग्रह की दशा में उसका कुछ अच्छा हो सके । वो भड़क गया और बोला - 'पंडित-जी, अभी तक शांत ही तो बैठा रहा हूँ । आप समझने की कोशिश करें - उसने मेरी तिक्का-बोटी कर रखी है ।'

'तिक्का-बोटी' । मैं असमंजस भरे स्वर में बोला । - उसका वो शब्द मेरी समझ में नहीं आया था ।

फिर वो अपनी भाषा पर शर्मिंदा नज़र आने लगा और मुझे मेरी भाषा में समझाता हुआ बोला - 'सर, उसने मेरी सोच को मेरे कर्म से अलग कर रखा है । जो मैं सोचता हूँ - वो मैं कर नहीं पाता हूँ और जो मैं करता हूँ - वो सोच नहीं पाता हूँ । '

फिर हम दोनों एक घंटे तक ऐसे ही चख-चख करते रहे । उसका कहना था कि - मैं ज्योतिषी था और मेरे पास हर समस्या का समाधान होना चाहिये । मेरा कहना था कि - ईश्वर की फैक्ट्री में बनी गाड़ी का मैं इंजीनियर हो सकता था, मैकेनिक हो सकता था । लेकिन उसकी गाड़ी के बुनियादी ढांचे में फेरबदल मैं नहीं कर सकता था । लड़की की कुंडली में पापग्रहों का प्रभाव उसके पूर्व जन्मों का फल था । जोकि उसका बुनियादी ढांचा था - ये कर्मों के लेन-देन से ही पूर्ण हो सकता था ।

अगर इसमें सुधार करना था तो इसमें बहुत उपाय और अनुष्ठानों की आवश्यकता थी। जोकि उसके लड़की से चल रहे मतभेदों के चलते संभव नहीं था। हम लोग इसी तरह तर्क-वितर्क करते रहे और अंत में निर्णय हुआ कि - वो अपनी कुंडली दिखाये।

वो तैयार हो गया लेकिन वो अपनी कुंडली साथ नहीं लाया था। तो तय हुआ कि - वो कल फिर आयेगा, अपनी कुंडली साथ लेकर। फिर जाते-जाते उसने वो सवाल पूछा, जिसकी मुझे पूरी आशंका थी। मैं पुरे समय ईश्वर से प्रार्थना करता रहा था कि - वो मुझसे वो सवाल ना पूछे - लेकिन उसने पूछा।

उसने पूछा - 'क्या मेरी बीवी का किसी से अफेयर था ?

ये सवाल तो उसने पुछना ही था, आखिर पत्नी सहयोग ना करे तो - पति एक बार तो ऐसा सोच ही सकता है। हालांकि पत्नियां ऐसे मामलों में सौ बार सोच लेती हैं।

मैं इस सवाल से बचना चाहता था। मेरे जवाब से उन दोनों पति-पत्नी के रिश्ते की गरिमा तय हो सकती थी। जबकि मेरा ऐसा मानना था कि - पति-पत्नी अपने रिश्ते की गरिमा को खुद ही तय करें। मैं उनके रिश्ते को 'कम-ज्यादा' नहीं करना चाहता था। लेकिन उसने सवाल कर लिया था और अब उसे जवाब चाहिये था।

मैंने बहुत सोच-समझ कर शब्दों का चयन किया और सावधानी से बोला - 'अफेयर का योग तो उसकी कुंडली में है - तभी तो अफेयर में तुम उससे शादी कर सके।' वो कुछ समझा और कुछ नहीं समझा, लेकिन वो आशवस्त बिल्कुल भी नहीं दिख रहा था। मैं ध्यान से उसी को देख रहा था।

उसकी बीवी की कुंडली में अफेयर तो एकदम साफ़ दिख रहा था। उसकी कुंडली एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की कुंडली थी। लेकिन मैं कैसे इस बात को क्लियर करता। इससे उनका वैवाहिक जीवन बर्बाद हो सकता था। वो पति-पत्नी एक-दूसरे की कमी-बेशी परखते, तो ज्यादा बेहतर होता। मैं धर्म-संकट में था।

फिर असमंजस से भरा वो चला गया और कल आने को कह गया। मैंने शान्ति की सांस ली और आँखे बंद कर ली। मैं ज़रा आराम महसूस करना चाहता था। उसको समझाने के चक्कर में मैंने खुद को थका लिया था।

फिर अचानक सीढ़ियों से चीखो-चिल्लाहट की आवाजें आने लगी। मैंने परवाह नहीं की, मैंने सोचा - होगा कोई। मेरा ऑफिस सेकण्ड फ्लोर पर था। मेरे ऑफिस के फ्लोर से ऊपर भी फ्लोर थे और लोग रहते थे। निचे भी लोग रहते थे। पता नहीं कौन लड़ रहा था - लड़ने दो - मैंने सोचा।

फिर किसी ने जोर से मेरे ऑफिस का दरवाजा खोला और कोई जवान औरत क्रोध से तमतमाये चेहरे के साथ अंदर प्रविष्ट हुई। वो उसकी बीवी थी। वो बोली - 'मेरे पति ने आपको मेरी कुंडली दिखाई।'

पता नहीं - वो मुझसे पुछ रही थी कि - मुझे बता रही थी ।

मैं आवाक सा उसको देखने लगा ।

वो मेरे ऑफिस के अंदर ऐसे घुस आई थी - मानो, उसको किसी की पर्वाह ही नहीं थी । वो मुझे ऐसे क्रोध मिश्रीत हिकारत से देख रही थी कि - मैं जल्दी ही समझ गया कि - उसे पुरुषों से जन्मजात नफ़रत थी । उसका चेहरा क्रोध से खिंचा हुआ था और माथे पर लकीरें उभरी हुई थी ।

वो पतली सी मगर अच्छे शारीरिक गठन वाली सुन्दर युवती थी । उसके नैन-नक्श तीखे थे और वो चेहरे से आकर्षक दिखती थी । लेकिन अब उसकी आँखों के आसपास हलके काले रंग के घेरे बनने लगे थे । उसकी 'लाफ-लाइन' भी विकृत होने लगी थी और सिलवटों के आकार में उसकी सुंदरता को कम करने पर तुली थी । ऐसा लगता था कि - यौन-संबंधो के मामले में उसने खुद को जकड़ रखा था । जिससे उसकी शारीरिक भूख उसके चेहरे को बिगाड़ रही थी ।

मुझे उसके पति से हमदर्दी होने लगी । मैंने सोचा - बेचारा, कैसे गुजर-बसर करता होगा - इसके साथ ।

उसने हाथ में पकड़ी कुंडली मेरे सामने लहराई जो कि कुछ देर पहले उसका पति मुझे दिखाकर गया था । वो बोली - 'मेरा पति आपको ये मेरी कुंडली दिखाकर गया ना - अभी-अभी ।' मेरा गला सूखने लगा । मैंने सोचा - पता नहीं, क्या पंगा होने वाला था ।

मैंने तो कुछ नहीं किया था, जहाँ तक हो सका था - मैंने उनकी शादी बचाने की कोशिश की थी । लेकिन लगता था कि - वो अपने पति की भड़ास मुझसे निकालने वाली थी । मैं मन ही मन गायत्री-जाप करने लगा । फिर हिम्मत जुटाकर मर्दाना अंदाज़ में मैं उससे बोला - 'आप कौन ? मैंने आपको पहचाना नहीं ।'

उसपर मेरे बोलने का कुछ असर हुआ याँ नहीं, मैं नहीं समझ पाया । लेकिन मुझे मेरी ही आवाज बकरी के जैसी मिमियाती सी लगी थी ।

वो हिकारत से मुझे देखते हुये और हाथ में पकड़ी कुंडली मुझे दिखाती हुई बोली - 'वो कमबख्त, मुझे सीढ़ियों में ही मिल गया था । मैंने सीढ़ियों में ही उसकी नीयत को भाँप लिया था कि - वो यहाँ मेरी कुंडली दिखाने आया था । ये कुंडली उसके हाथ में थी और यहाँ आपका ऑफिस है ।' वो मुझे घूरते हुये बोली - 'और वो यहाँ किस लिये आयेगा ?'

मैंने मज़बूरी में उसके लिये सहमति में सर हिलाया । मेरे पास और कोई रास्ता भी नहीं था । तब मेरी समझ में ये भी आया कि - कुछ देर पहले सीढ़ियों से आने वाली लड़ने की आवाजें इन्ही दोनों पति-पत्नी की थी । लेकिन मैं ये नहीं समझ पाया कि - वो यहाँ पहुंची कैसे ? मैंने सोचा - क्या वो शुरू से ही उसका पीछा कर रही थी ?

फिर वो शुरू हो गई - 'वो आदमी किसी काम का नहीं है । मैं उससे शादी करके पछता रही हूँ, कमबख्त मुझ पर शक करता है । मेरी जासूसी करता है - उसे शक है कि - मेरा किसी से अफेयर है ।

अगर मैं शादी से खुश नहीं हूँ तो मुझे दूसरी शादी करने का हक़ है और इसके लिये मैं बाहर किसी से मिलती हूँ और अपने लिये ऑप्शन तलाशती हूँ - तो क्या बुरा करती हूँ ?'

उसने मुझे डपटने वाले अंदाज़ में बताया ।

मैं सोच में था कि - कमाल है - शादी-शुदा औरतें भी अपने लिये दूसरा पति ढूंढने निकलती है । अब मुझे क्या बोलना चाहिये, मैं सोचने लगा ।

मैंने खोखली आवाज में पूछा - 'लेकिन आप लोगों ने तो 'लव-मैरिज' की है ।'

'हाँ' - वो सोचपूर्ण स्वर में बोली - 'मेरा अंदाज़ा गलत निकला, वो शान्ति से चलना नहीं जानता । उसे आजकल के ज़माने में मुझसे पत्नियों जैसी सेवा चाहिये, उसे लगता है - मुझे हर बात उससे पूछकर करनी चाहिये । वो मुझे आज़ादी से रहने देना नहीं चाहता ।'

वो गर्व पूर्ण स्वर में बोली - 'आखिर आज़ादी पर मेरा भी हक़ है और भारत का संविधान मुझे इसका हक़ देता है ।'

मुझे उसकी कुंडली में शनि-मंगल की युति की याद आई और मैं अंदाजा लगाने लगा कि - ये युति कितनी घातक सिद्ध हो सकती थी । फिर बहुत देर तक वो अपने पति की बुराई करती रही और मुझे विश्वास दिलाने की कोशिश करती रही कि - शादी के ना चल पाने की वजह उसका पति था - वो स्वयं नहीं ।

बीच-बीच में उसने ज्योतिष की बात भी की - जिसका औचित्य सिर्फ ये था कि - वो मेरे विषय का भी ध्यान रख रही थी । मैंने अंदाज़ा लगाया कि - वो बहुत चालाक और होशियार थी । हर तरफ उसका ध्यान था और हर जगह उसकी दृष्टी थी । उससे पार पाना मुश्किल था ।

मैंने सोचा - ज्योतिष में उसका क्या उपाय हो सकता था । मैंने निष्कर्ष निकाला - ज्योतिष में उसका उपाय असंभव था । क्योंकि ना तो वो कुछ सुनने वाली थी और ना ही वो कुछ करने वाली थी । आखिर, ज्योतिष - विश्वास और श्रद्धा का विषय था और इन्ही दो बातों की उसमे बहुत कमी थी ।

बहरहाल, जैसे-तैसे वो गई और मुझे ताकीद करके गई कि - अगर उसका पति आये तो मैं उसे समझाऊं कि - वो अपना बिहैवियर ठीक करे ।

मैं क्या करता - उसकी हाँ में हाँ करता रहा ।

दरअसल, इन दो पति-पत्नी की बात नहीं थी । मूल बात तो थी कर्मों की - जो ये समझ नहीं पा रहे थे ।

आज अगर हम कोई लेन-देन करते हैं तो वो हमारे कर्म होते हैं । फिर अगले दिन उसकी अगली कड़ी चलनी है । अर्थात जो लिया था - वो देना है और जो दिया था - वो लेना है ।

ये दिन-ब-दिन तो होता है - जन्म-दर-जन्म भी होता है ।

किसी से पैसा लिया है - किसी का फ़ायदा उठाया है - किसी पर ज़ुल्म किया है । तो याद रखें - इसकी अगली कड़ी चलने वाली है । जो दिया है - वो वापस मिलेगा और जो लिया है - वो वापस देना होगा ।

ये कर्मयोग है - इसका कोई जवाब नहीं, इसका कोई विकल्प नहीं ।

ज्योतिष इसको पहचानता है - इसको दिखाता है और इसको दर्शाता है । ज्योतिष - जातक को इसके प्रति समर्पित होना सिखाता है ।

अंत में, वो दोनों पति-पत्नी फिर कभी मेरे पास नहीं आये - पता नहीं, उनका क्या हुआ ।

फिलहाल.....समाप्त

सुरेश भारद्वाज - उल्हासनगर, मुम्बई.

www.bhagyadisha.com